

# सपने की व्याख्या

रेटिंग: **TOP20**

**विवरण:** ?????? ?? ?? ?????????? ??????; ?????? ??? ?????? ?????? ?? ?????? ?? ??? ?????????? ?????????? ?????? ??? ?? ?????? ?????????? ?? ?????????? ?? ?????? ?? ?????? ??? ?????? ?????? ??????????

**श्रेणी:** [पाठ](#) > [इस्लामी मान्यताएं](#) > [आस्था के अनुच्छेद](#)

**द्वारा:** Aisha Stacey (© 2016 NewMuslims.com)

**प्रकाशित हुआ:** 08 Nov 2022

**अंतिम बार संशोधित:** 07 Nov 2022

## उद्देश्य

यह समझना कि इस्लाम सपनों और सपनों की व्याख्या को कैसे देखता है।

## अरबी शब्द

·????????? - मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना।

·????? - यह इस्लाम और अरबी भाषा में इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है जो शैतान यानि बुराई की पहचान को दर्शाता है।

·????? - अध्ययन के क्षेत्र के आधार पर सुन्नत शब्द के कई अर्थ हैं, हालांकि आम तौर पर इसका अर्थ है जो कुछ भी पैगंबर ने कहा, किया या करने को कहा।

## सपनों का महत्व

सपना विचारों, छवियों और संवेदनाओं की एक श्रृंखला है जो एक व्यक्ति के सोते समय मन में होती है। सपने एक सार्वभौमिक मानवीय अनुभव हैं और सपने देखने वाले का इसकी सामग्री पर बहुत कम नियंत्रण होता है। सपनों में हमारे अनुभवों में बहुत ही सजीव गुण होते हैं और ये बेहद ज्वलंत और अक्सर विचित्र हो सकते हैं। कुछ लोग



सपनों के दौरान बहुत भावनात्मक अनुभवों का वर्णन करते हैं और भयावह या परेशान करने वाले सपनों

को अक्सर बुरे सपने के रूप में जाना जाता है। मानवजात के पूरे इतिहास में लोगों ने अपने सपनों की व्याख्या करने की कोशिश की है और बहुत से लोग मानते हैं कि उनमें महत्वपूर्ण संदेश या प्रतीक होते हैं। सपनों से जुड़े कई अंधविश्वास और मान्यताएं हैं और इस्लाम ने सपनों और उनकी व्याख्या से जुड़ी कई गलतफहमियों को दूर किया है।

इस्लाम के विद्वानों का कहना है कि जहां सपने सार्थक हो सकते हैं, वहीं सभी सपनों को महत्वपूर्ण नहीं माना जाना चाहिए। इब्न सरिनि को सपनों की व्याख्या पर इस्लामी दुनिया का सबसे प्रमुख विशेषज्ञ माना जाता है और वे इसे एक कठिन विज्ञान कहते हैं, जिसे अत्यंत सावधानी के साथ करना चाहिए। एक सपने का महत्व आमतौर पर सपने देखने वाले पर पड़ने वाले प्रभाव से निर्धारित होता है, हालांकि अधिकांश सपनों का कोई वास्तविक मूल्य नहीं होता है और इस प्रकार व्याख्या की कोई आवश्यकता नहीं होती है।

## तीन प्रकार के सपने

पैगंबर मुहम्मद (उन पर अल्लाह की दया और आशीर्वाद हो) ने हमें बताया कि सपने तीन प्रकार के होते हैं<sup>[1]</sup>। एक सच्चा सपना (जैसे कभी-कभी एक अच्छा सपना कहा जाता है) जो अल्लाह की ओर से हमारे लिए आता है, एक बुरा या भयावह सपना जो शैतान की ओर से आता है और तीसरा वह सपना जो किसी व्यक्ति के अनुभवों और विचारों से आता है। प्रत्येक को अलग तरह से प्रबंधित किया जाना चाहिए।

पैगंबर मुहम्मद ने कहा कि अगर किसी को कोई सपना आता है और वह उसे पसंद है तो वह अल्लाह की ओर से है। इसलिए उसे इसके लिए अल्लाह का शुक्रिया अदा करना चाहिए और दूसरों को बताना चाहिए<sup>[2]</sup>। पैगंबर ने आगे बताया कि यदि किसी व्यक्ति का सपना अच्छा है तो उसे अच्छी चीजों के होने की उम्मीद करनी चाहिए और केवल उन लोगों को सपना सुनाना चाहिए जिन्हें वो पसंद करता है<sup>[3]</sup>। कुरआन में इसका एक उदाहरण है, जब पैगंबर यूसुफ ने अपने सपने के बारे में अपने पिता को बताया और कहा कि उन्होंने सपने में सूर्य, चंद्रमा और सितारों को उनका सजदा करते देखा है, तो उनके पिता पैगंबर याकूब ने यूसुफ से कहा कि वह अपने भाइयों से इस सपने के बारे में न बताये।

**“जब यूसुफ ने अपने पिता से कहा: ऐ मेरे पिता! मैंने स्वप्न देखा है कि ग्यारह सितारे, सूर्य तथा चांद मुझे सजदा कर रहे हैं। उसने कहा: ऐ मेरे पुत्र! अपना स्वप्न अपने भाइयों को न बताना, अन्यथा वे तेरे विरुद्ध षडयंत्र रचेंगे।” (कुरआन 12: 4-5)**

भयावह या परेशान करने वाले सपने शैतान की ओर से होते हैं और हमें डराने और भयभीत करने के उसके प्रयासों के अलावा और कुछ नहीं हैं। पैगंबर मुहम्मद हमें बताते हैं कि ये सपने किसी व्यक्ति को किसी भी

तरह से नुकसान नहीं पहुंचाएंगे। इस प्रकार यदि किसी व्यक्ति को कोई बुरा सपना या दुःस्वप्न है तो उसे अपनी बाईं ओर तीन बार सूखा थूकना चाहिए (कोई लार नहीं निकालनी चाहिए) और शैतान से बचने के लिए अल्लाह की शरण लेनी चाहिए[4]। उन्होंने करवट बदलने की सलाह भी दी[5]।

तीसरे प्रकार का सपना वह है जो अच्छी या बुरी श्रेणी में नहीं आता है। ये सपने उस बात से आते हैं जो कोई व्यक्ति सोच रहा होता है या चिंता कर रहा होता है या स्मृति और अवचेतन में संग्रहीत अनुभवों, घटनाओं और भय से आता है। इन सपनों का कोई परिणाम नहीं होता और इनकी कोई व्याख्या नहीं होती।

## सपनों की व्याख्या के नियम

अधिकांश इस्लामी विद्वानों का मत है कि सपनों की व्याख्या केवल उसी व्यक्ति से करवानी चाहिए जो ऐसा करने के योग्य हो। इसका कारण यह है कि सपनों की व्याख्या समस्याग्रस्त हो सकती है। उदाहरण के लिए एक साधारण सी बात को लें जैसे कि यह जानना कि क्या आपने जो सपना देखा था वह आपके बारे में था या किसी और के बारे में या यहां तक कि किसी और से जुड़े किसी व्यक्ति के बारे में। पैगंबर मुहम्मद के एक साथी ने सपने में देखा कि इस्लाम का सबसे बड़ा दुश्मन अबू जहल मुस्लिम बन रहा है और पैगंबर के प्रतिनिष्ठ का वचन दे रहा है। लेकिन ऐसा नहीं हुआ; यह अबू जहल का बेटा था जो कुछ समय बाद इस्लाम में परिवर्तित हो गया और निष्ठ की कसम खाई। सपनों में प्रतीक भी समस्याग्रस्त होते हैं क्योंकि उनका अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग मतलब होता है।

हमें सावधान रहना चाहिए कि हम सपनों पर बहुत अधिक भरोसा न करें या यह विश्वास न करें कि इसमें छपि हुए अर्थ और प्रतीक हैं। हालांकि कुछ सपने ऐसे भी होते हैं जिनकी व्याख्या करना आसान होता है। यदि सपने में पैगंबर मुहम्मद दिखाई देते हैं और ऐसे दखिते हैं जैसा कि सुन्नत में वर्णन है, तो हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि यह एक सच्चा सपना है, अल्लाह की ओर से है और अच्छी खबरों से भरा हुआ है। पैगंबर ने कहा कि जिस किसी ने उन्हें सपने में देखा उसने वास्तव में सच्चाई देखी[6]।

इस खिारा प्रार्थना[7] के उत्तर के रूप में सपनों की व्याख्या करना एक गलत प्रथा है। अल्लाह इस प्रार्थना का जवाब सपनों के जरिए नहीं देता। जिन सपनों की व्याख्या की जाती है उन्हें कुरआन और सुन्नत के अनुसार कया जाना चाहिए। इसका एक उदाहरण होगा यदि कोई व्यक्ति किसी को कसकर पकड़ने का सपना देखता है, तो हम समझ सकते हैं कि इसका मतलब है अल्लाह के साथ अनुबंध क्योंकि कुरआन में नमिनलखिति छंद है।

**“तथा अल्लाह की रस्सी को सब मलिकर दृढ़ता से पकड़ लो...” (कुरआन 3:103)**

# पैगंबरो के सपने

सच्चे या अच्छे सपने पैगंबरी का एक हस्सा है; पैगंबर मुहम्मद ने हमें बताया कि सच्चे सपने पैगंबरी के 46 भागों में से एक है<sup>[8]</sup>। उनकी प्यारी पत्नी आयशा हमें बताती हैं कि पैगंबर को दिया गया पहला रहस्योदघाटन गहरी नींद की स्थिति में एक सच्चा सपना था और उन्होंने इसके बाद कभी ऐसा सपना नहीं देखा जो पैगंबरी न हो<sup>[9]</sup>। इस्लाम के वदिवान इस बात से सहमत हैं कि पैगंबरो के सपने रहस्योदघाटन का एक रूप हैं। इसका एक उदाहरण है जब पैगंबर इब्राहिम ने अपने बेटे की कुरबानी करने का इरादा किया था क्योंकि उसने इसे सपने में देखा था।

सपने की सच्चाई सपने देखने वाले की सच्चाई और ईमानदारी से जुड़ी होती है। पैगंबर मुहम्मद ने कहा कि जिनके सपने सबसे सच्चे होते हैं, वे भाषा में सबसे सच्चे होते हैं<sup>[10]</sup>। उन्होंने हमें यह भी बताया कि दुनिया के आखिरी दिनों में बहुत कम झूठे सपने होंगे। उन्होंने समझाया कि चूंकि उस समय पैगंबर और उनके प्रभाव समय के हिसाब से बहुत दूर होंगे, इसकी भरपाई के लिए विश्वासियों को सच्चे सपने आएंगे<sup>[11]</sup>।

---

फुटनोट:

[1] सहीह अल-बुखारी

[2] सहीह अल-बुखारी

[3] सहीह मुस्लिमि

[4] सहीह अल-बुखारी और सहीह मुस्लिमि

[5] सहीह मुस्लिमि

[6] सहीह अल-बुखारी

[7] यहां समझाया गया है: <http://www.newmuslims.com/lessons/163/>

[8] सहीह अल-बुखारी

[9] सहीह अल-बुखारी

[10] सहीह मुस्लमि

[11] सहीह अल-बुखारीऔर सहीह मुस्लमि

इस लेख का वेब पता

<https://www.newmuslims.com/hi/articles/321>

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।